विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -22-10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नींव की ईंट नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

पाठ -12

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुंदर, सुघड़-सी, इमारत है, वह किस पर टिकी है इसके कँगूरों को आप देखा करते हैं, क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर ध्यान दिया है

दुनिया चमक-दमक देखती है, ऊपर का आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है, उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है।

ठोस सत्य सदा शिवम् होता है किन्तु वह हमेशा सुन्दरम्' भी हो, यह आवश्यक नहीं। सत्य, कठोर होता है। कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं। हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते है इसलिए सत्य से भी भागते हैं। नहीं तो हम इमारत के गीत नींव के गीत से प्रारंभ करते।

वह ईंट धन्य है जो कट-छंटकर कंगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोक-लोचनों को अपनी ओर आकृष्ट करती है। किन्तु धन्य है वह ईंट जो जमीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत स-

की पहली ईंट पर उसकी मजबूती और पुख्तेपन पर सारी इमारत की अस्ति-नास्ति निर्भर करती है।

रह

उस ईंट को हिला दीजिए। कँगूरा बेतहाशा जमीन पर आ गिरेगा।

कंगूरे के गीत गानेवाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट जो जमीन में इसलिए गड़ गयी कि दुनिया को इमारत मिले, कंगूरा मिले। वह ईंट जो सब र

ईंट से ज्यादा पक्की थी जो ऊपर लगी होती तो कंगूरे की शोभा सौगुनी कर देती।

वह ईंट जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अंदर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत जमीन से

सौ हाथ ऊपर तक जा सके। वह ईंट जिसने अपने लिए अंधकूप इसीलिए कबूल किया कि हवा

मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे।

ध्यान पूर्वक पढ़े।